ज्ञान तत्व 219

सभ्रान्त महिलाओं की नकली पीड़ा घातक

भारत के उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी जी की पत्नी सलमा अंसारी ने भारत में महिलाऔं की दयनीय स्थिति पर निराशा व्यक्त करते हुए कहा कि अच्छा तो यही होता कि समाज में महिलाओं के साथ इतना बुरा व्यवहार करने की अपेक्षा उन्हे पैदा होते ही मार दिया जाता। सलमा जी ने भले ही अपनी भावनाओं का शब्द चयन में अतिरेक कर दिया हो किन्तु उन्होने अपने मन का यथार्थ व्यक्त कर दिया है। किरण वेदी, मैत्रेयी पुष्पा आदि ने भी शालीन शब्दो मे इस प्रश्न को उठाया ही है। मृणाल पाडे कई बार लिख चुकी है। मैने ज्ञान तत्व में बार बार लिखा है कि भारत की वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था शरीफो गरीबो, श्रमजीवियों तथा सामान्य नागरिको के शोषण के उद्देश्य से अपराधियों, पूंजीपतियों, बुद्धिजीवियों तथा राजनेताओं का मिला–झुला षड़यंत्र है। मै अब भी अपनी बात पर कायम हूॅ । वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था का प्रत्येक कदम इन सब गुटो की योजना का हिस्सा होता है। श्रीमति सलमा अंसारी, किरण वेदी, मैत्रेयी पुष्पा मृणाल पाण्डे आदि का नाम इनमे शामिल है। सच्चाई यह है कि ऐसी महिलाओं की संख्या हजारो में है, जो इस शोषण योजना की सक्रिय सदस्य हैं। इन हजारो तथा कथित महिला चिन्तको में एक भी ऐसी नही जो किसी गरीबी रेखा से नीचे के पारिवार की सदस्य हो।

सम्पूर्ण भारत में करीब चौबीस करोड़ परिवार रहते हैं । इन चौबीस करोड़ परिवारों में से करीब बीस करोड़ परिवार ऐसे हैं, जो गरीबों श्रमजीवियों तथा सामान्य श्रेणी मे माने जा सकते है। शेष चार पांच करोड़ परिवार ही सम्पन्न बुद्धिजीवियों या राजनेता की श्रेणी में शामिल हैं। ये चार पांच करोड़ परिवार येन केन प्रकारेण निरंतर ऐसी योजनाऍ बनाते रहते हैं, जो पचीस करोड परिवारो की सारी सम्पति सारी राजनैतिक ंशक्ति इन्ही चार पांच करोड तक सीमित कर दे तथा ंशेष बीस करोड तक इसकी जूठन भी न पहुच पावे । ये परिवार समाज को वर्गो में बांटकर वर्ग विद्वेष का ऐसा नाटक करते हैं कि तीन चौथाई परिवार इन एक चौथाई को ही अपना मार्ग दर्शक मान कर इनके मार्गदर्शन में वर्ग विद्वेष में उलझ जावे। समाज आपस में टकराता रहे और ये एक चौथाई परिवार चुप चाप सारा मजा लूटते रहें। इन सबका उद्देश्य न समाज हित है न वर्ग हित। इनका एक मात्र उद्देश्य है स्व परिवार हित। इन हजारो महिलाओं का सिर्फ इतना ही उद्देश्य है जिसे ये नारी हित के आवरण में लपेट कर समाज को दिन रात परोसती रहती हैं। सच्चाई यह है कि नारी हित का आवरण एक मीठा जहर है जो समाज को निरंतर खोखला कर रहा है किन्तु इन सभ्रान्त महिलाओ को इसकी कोई चिन्ता नही।

श्रीमती सलमा अंसारी ने बहुत ही तीखे शब्दो में महिला उत्पीडन का चित्र खीचा है। शब्द चयन ऐसा है कि मुझे भी लिखने को विवश होना पडा। मै सलमा जी से जानना चाहता हूँ कि उन्हे समाज ने कौन सम्मान या लाभ नही दिया जिसकी उनके पास योग्यता थी। मै तो यहाँ तक मानता हूँ कि समाज ने उन्हे उनकी योग्यता से कई गुना अधिक सम्माान और सुविधा सिर्फ इसलिये दे रखी है कि वे उपराष्ट्रपति की पत्नी हैं। उपराष्ट्रपति की पत्नी हो जाने से उनकी सामाजिक योग्यता में कोई ऐसा विस्तार नही हो जाता जिसे वे अपना अधिकार समझने लगे । यह तो समाज ने अपना कर्तव्य समझ कर ऐसे प्रमुख लोगो के परिवारो को भी महत्वपूर्ण मानने की परिपाटी डाल ली । हमे दुख है कि सलमा जी इस परिपाटी को ही अपना अधिकार मानकर समाज को कोसने का नाटक कर रही है। क्या उन्होने कभी यह सोचा कि यदि वास्तव में समाज में उनके व्यंग्य अनुसार जन्मते ही कन्या वध का स्वभाविक चलन होता तो वे आज ऐसे तीखे व्यंग्य करने के लिए कहाँ होती।

ये किरण वेदी, सलमा अंसारी, मैत्रेयी पुष्पा आदि स्वयं के लिए चिन्तित है या उन तीन चौथाई परिवारो की महिलाओं के लिए जो आज भी बीस रूपये दैनिक से भी कम पर ही अपना गुजर बसर करती है । निश्चित रूप से इनका महिला सशक्तिकरण का रोना उन महिलाओं के लिए तो नही ही है । संसद में एक तिहाई महिला आरक्षण हो या आधा या पूरा, इन तीन चौथाई परिवारो की रोजी रोटी पर कोई फर्क नही पड़ने वाला । दिन भर मेंहनत करने के बाद भी पति के हाँथो मार खाने वाली नारी को तब और भी ज्यादा कष्ट होता है जब उसके कष्टो के नाम पर सम्पन्न महिलाओं का व्यापार शुरू हो जाता है । बेचारी गरीब महिलायें कष्ट उठाती है। इसलिए उनके नाम पर इन सम्पन्न महिलाओं को लाभ के पद दे दिये जायें जिससे शायद उन बेचारी महिलाओ का पेट भर जायेगा। कितना अमानवीय तर्क है? यदि महिला के नाम पर सलमा जी, किरण वेदी मैत्रेयी पुष्पा आदि को लाभकारी पद प्राप्त हो जाये तो उसका सारा लाभ उसके पति, पुत्र, भाई आदि पारिवारिक लोगो को ही मिलना है। आज तक जो भी महिलाये आरक्षण के नाम पर नौकरी में गई उन्होने कितना पैसा अपने परिवार के अतिरिक्त महिला कल्याण कोश में जमा किया। कष्टो के वर्णन के किए पचहत्तर करोड़ कमजोर घरो की महिलाओं के उदाहरण और नौकरी पाने के लिए पच्चीस करोड़ परिवारों की महिलायें आगे आगे। नेता मर गया तो उसकी औरत महिला के नाम पर सबसे आगे। सच्चाई यह है कि इन महिलाओं को न समाज से मतलब है न न्याय से। ये तो येन केन प्रकारेण देश की सुविधाओं का अधिकतम लाभ अपने परिवार के लिए लूट लेना चाहती है। इस लूट के लिए यदि इन्हे महिला होनें का नाटक भी करना पड़े तो कोई हर्ज नही ।

ये महिलायें पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था के विरूद्ध दिन रात बोलने का उपक्रम करती रहती है। यह पुरूष प्रधान व्यवस्था किसी महिला के लिए वाध्यकारी नही। आप स्वतंत्र है अपना पति चुनने के लिए। एक पति अपने

से कम योग्य स्त्री के साथ अपना जीवन गुजार देता है और वह पुरूष प्रधान के रूप में रहता है । यदि किसी महिला को पुरूष प्रधान व्यवस्था अमान्य है तो वह क्यों नही किसी बहुत कम योग्य लड़के को जीवन साथी चुन लेती है? उसका निरक्षर पति उसकी सेवा करेगा और वह परिवार का भरण पोषण करेगी। किसने रोका उसे? विवाह करते समय अपने से ज्यादा योग्य पति चाहिए और विवाह के बाद या तो पति से लड़ झगड़ कर समानता के विवाद पैदा करना या पति के साथ मिलकर समाज में सुविधाओं की छीना–झपटी के लिए महिला आरक्षण, महिला उत्थान जैसे नारे लगाना।

मेरा यह स्पष्ट मत है कि

(1) महिला और पुरूष दो अलग अलग व्यक्तिगत इकाईयां है जो कि परिवार के साथ जुड़ते ही व्यक्तिगत इकाई का स्वरूप खो कर परिवार रूपी इकाई में रूपान्तरित हो जाती है। समाज में पुरूष और महिला को वर्ग रूप में खड़ा करना घातक है

(2) महिला अधिाकार के लिए संघर्ष करने की परम्परा कुछ महिलाओं द्वारा अपने परिवार के लिए अधिक से अधिक लाभ लूटने की योजना के अतिरिक्त कुछ नही।

(3) पुरूष प्रधान व्यवस्था का मूल आधार कम योग्य महिला द्वारा अधिक योग्य पुरूष के साथ विवाह करके परिवार की प्रथा से जुड़ा है, महिला सामानता की पक्षधर महिलाओं को सबसे पहले अपनी लड़कियों को कम योग्य लड़को के साथ जोड़कर पहल करनी चाहिए अधिकांश महिला उत्पीड़न तो यहीं से रूक जायेगा।

इन सभ्रान्त महिलाओं का मुख्य आरोप है कि समाज में महिलाओं पर बलात्कार के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। यह बात सच भी हैं। विचारणीय प्रश्न यह है कि बलात्कार बढ़ने के लिये समाज दोषी है या नई राजनैतिक व्यवस्था? सब लोग कहते है कि नई राजनैतिक व्यवस्था के परिणाम स्वरूप महिलाओं मे कई गुना ज्यादा जागृति आई हैं। जब महिलाओं में पुराने समय की अपेक्षा जागृति आई है तो बलात्कार बढ़ क्यों रहें हैं ? जागृति और बलात्कार का कोई संबंध है क्या यह एक गंभीर विषय है। यदि किसी वस्तु की मांग बढ़ेगी और पूर्ति घटेगी तो भ्रष्टाचार होना निश्चित है। नई राजनैतिक व्यवस्था ने महिला पुरूष के बीच के संबंधों की पूर्व प्रचलित व्यवस्था के साथ अनावश्यक छेड़ छाड़ की। इन्होने महिला जागृति के नाम पर महिला और पुरूष के बीच की दूरियॉ कम कर दी। स्वाभाविक ही था कि दूरी कम होने से इच्छायें अधिक पैदा होने लगी और सैक्स की मॉग बढ़ी ।इन नई व्यवस्था वालो ने वैश्यावृति पर रोक लगाकर पूर्ति घटा दी। इनसे कौन पूछे कि बलात्कार वृद्धि का मूल कारण तो तुम जैसी महिलायें ही हो जो स्त्री पुरूष के बीच की दूरी भी घटाना चाहती हो और वैश्यावृति भी रोकना चाहती हो या जो असंभव है। बलात्कार का बढ़ना नई व्यवस्था का स्वाभाविक परिणाम है ।

मै सलमा जी और किरण वेदी से पूछना चाहता हूॅ कि महिला पुरूष के बीच दूरी भी घटे, वैश्यावृति को भी रोक दिया जाय और बलात्कार भी न हो इसका उनके पास क्या उपाए है ? तीनो का यदि एक साथ कोई समाधान है तो सिर्फ एक ही है कि सारे पुरूष समाज को एक ऐसा इंजैक्शन लगा दिया जाय कि उनकी स्वाभाविक काम इच्छा ही पूरी तरह समाप्त हो जावे । फिर नपुंसक पुरूषो से महिलाओं को कोई खतरा ही नही रहेगा।

मै सलमा जी, किरण वेदी आदि से निवेदन करता हूॅ कि उन्हे और उनके परिवार को समाज ने जो कुछ सम्मान और सुविधा दी है उतने से ही संतोष करके दूसरे परिवारो को आगे आने दे। यदि वे पति को योग्यता के आधार पर और स्वंय महिला के नाम पर छीना झपटी करेगी तो इस समाज के साथ अन्याय करेगी । आज भले ही उन्हे इसका लाभ मिल जावे परन्तु इतिहास कलंकित ही होगा जो उनके लिए ठीक नही होगा। अपने राजनैतिक स्वार्थ के लिए महिला और पुरूष को वर्ग के रूप में खड़ा मत करिये। समाज के सामाजिक संबंधो के साथ छेड़ छाड़ न करे तो समाज अनेक समस्याऍ अपने आप सुलझा लेगा।

प्रश्नोत्तर

1 आचार्य पंकज, राष्ट्रीय अध्यक्ष व्यवस्था परिवर्तन मंच, रिषिकेष, उत्तरांचल

सुझाव–जनसत्ता तीन अक्टूबर में छपे समाचार के अनुसार राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलौत ने राजस्थान की ग्राम पंचायतों को पांच विभागो के विधायी अधिकार सौपने की घोषणा की है। श्री गहलौत भारत के पहले मुख्यमंत्री हैं जिन्होने यह पहल की है किन्तु आपने मनमोहन सिंह, चिदम्बरम, नरेन्द्र मोदी, नीतिश कुमार आदि के साथ अशोक गहलौत का नाम नही जोड़ा। श्री गहलौत गांधीवादी विचारो पर कामकर रहे है। मेरा सुझाव है कि आपने जो तीन श्रेणियां बनाई हैं उनमें गहलौत जी को पहली श्रेणी में रखें ।

उत्तर–जनसत्ता में छपे समाचार के अनुसार श्री अशोक गहलौत ने राजस्थान की पंचायतो को कोंई एक भी विधायी अधिकार नही दिया है। आप जानते है कि भाजपा नीतियों के आधार पर केन्द्रीयकरण की पक्षधर है और कांग्रेस विकेन्द्रीयकरण की । पिछली वसुन्धरा सरकार ने पंचायतो को प्राप्त उन्तीस कार्यपालिक अधिकार धीरे–धीरे वापस कर लिये थे। गहलौत सरकार ने उनमें से पांच विभाग फिर से पंचायतों को देने की घोषणा की है। ये पंचायतो को प्राप्त होने वाले विधायी अधिकार नही है । आज तक किसी भी प्रदेश में कोई भी विधायी अधिकार पंचायतो को नही दिया गया है। यहॉ तक कि मध्यप्रदेश के मुख्य मंत्री दिग्वीजय सिंह ने भी जो पंचायती राज्य के प्रमुख समर्थक माने गये, उन्होने भी यह पहल नही की फिर भी श्री गहलौत ने

भाजपा सरकार में वापस किये गये अधिकार पंचायतों को वापस करने की पहल करके अच्छा काम किया है। मै उनका धन्यवाद करता हूँ।

जो तीन प्रकार की सूचियॉ बनी है उसका मुख्य आधार भ्रष्टाचार है । भ्रष्टाचार के मामले में अशोक गहलौत जी भी ठीक माने जाते है किन्तु अभी नरेन्द्र मोदी,मनमोहन सिंह, नितिश कुमार की तुलना में उन्हे कुछ और समय बिताना होगा। हो सकता है कि मेरी जानकारी अधूरी हो । भविष्य में इस सूची में जब संशोधन होगा तब अवश्य ही ध्यान रखा जायेगा।

2 श्री चन्द्र मौलेश्वर प्रसाद, अलवल, सिकन्दराबाद, आन्ध्र इमेल से

प्रश्न–15 फरवरी के अंक में आपने विनायक सेन प्रकरण में कुछ बाते कही हैं जो चिन्तनीय है। आपने कहा कि अरून्धति के विचारो पर कानूनी कार्यवाही नही होनी चाहिए क्योंकि यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है। हम किस गुमान में ऐसी अभिव्यक्तियों को बढावा दे रहे है जो देश को तोड़ने की नींव डाल रही है। अंग्रेजी में कहावत है–निप इट इन द बड। यदि हम बीज रूप में ही इसका समाधान निकाल ले तो पेड़ को काटने की आवश्यकता ही नही रहेगी। नक्सली हो या पीयूसीएल। वे नक्सली के मरने पर शोर मचायेगें पर मासूम लोग बस में मारे गये या पुलिस बल को बम से उड़ाया गया तो इन्हे सांप सुघ जायेगा वेंगल राव जब मुख्रमंत्री थे तब इन पर सख्ती से काम किया गया था और उस समय इनका सफाया कर दिया था। उसके बाद की सरकारो की ढुलमुल नीति के कारण बात यहॉ तक आ पहुची है। विनायक प्रकरण का एक कोण यह भी है कि ईसाइयत का प्रसार हो रहा था तभी तो विदेशी भी आकर उनसे सहानुभूति जता रहे थे । ऐसे कई कोण हैं जिन्हे ध्यान में रखना होगा।

कश्मीर के बारे में आज अलगाववादी इसलिए जोर शोर से बोल रहे है क्योंकि 1948 में उसे नही कुचला गया । रही कश्मीरी पंडितो की बात तो जब आठ दस प्रतिशत मुश्लमान देश की राजनीति को बदल सकते है तो इन पंडितो ने यह कार्य क्यो नही किया। इसलिए कि उनके साथ सरकार नही थी तभी तो उन्हे अपने जन्मस्थल को छोड़कर भागना पड़ा। यदि आज भी देश के लोगों को छूट मिले कि वे कश्मीर में बस सकते है तो शायद तस्वीर कुछ और होगी। अब तो चीन भी साफ कह रहा है कि युद्ध ही किसी चीज का हल है और भारत में हमारा नमक खाते हुए भी देश का झंडा पकड़ने से लोग कतरा रहें है जबकि इन्ही लोगो को यह दिखाई नही देता कि चीन ने कश्मीर के बड़े भाग को कब्जाया है!!! वहां के नेता आज भी रियासत के ख्वाब देख रहें है तभी तो वे कश्मीरीयत की बात करते है भारतीयता की बात नहीं करते।

इस अंक में मेरे पत्र कि उत्तर में आपने कुछ मुद्दे उठाए हैं। आपने कहा कि किरण बेदी और स्वामी रामदेव ने समाज को कोई ऐसा मार्ग नहीं दिखाया

है। यहीं सोच का अंतर है, बुद्धिजीवी और राजनीति में। बुद्धिजीवी ईमानदार भले ही हो वह राजनीति नहीं कर सकता। यह काम राजनेता का है जो मार्ग सुझा सकते हैं और उन्हें लागू भी कर सकते है। हमारे देश के सर्वश्रेष्ठ बुद्धिजीवी आज प्रद्यानमंत्री हैं पर उनकी राजनीति पर पकड़ नहीं है, इसलिए वे अपने आप को असहाय पाते है। जिस व्यत्ति ने देश को आर्थिक दलदल से निकाला था आज वही राजनीतिक दलदल में फसां हैं, इससे अद्यिक दुर्भाग्य देश का क्या होगा। आज जब बाहुबली अपराधिक पृष्ठभूमि के लोग संसद में है और कानून बनाने की प्रक्रिया उनके हाथ में है, तो कानूनदां भी कुछ नहीं कर सकता। इसका समाधान संसद ही निकाल सकती है ।

आपने शिक्षित और भ्रष्टाचार के कुछ आकड़े देते हुए यह सिद्ध किया है कि शिक्षा के साथ भ्रष्टाचार भी बढ़ा है। शिक्षित और पढ़े–लिखे में अंतर हैं। हम शिक्षित उसे कहेंगे जो अच्छे संस्कार और आचार के साथ ज्ञान पाता है। आज शिक्षा के नाम पर संस्कार और आचार का पठन शून्य है। तो फिर, अच्छे नागरिक कहा से पैदा होंगे ?

उत्तर– आपका सुझाव है कि जहरीले फल देने वाले बीज को ही नष्ट कर देना सबसे आसान काम है। आप यह सोचिये कि बीज अच्छा भी हो सकता है और जहरीला भी। कौन सा बीज जहरीला है इसका निर्णय कौन करेगा? समाज या राज्य ? यदि राज्य को निर्णय का अन्तिम अधिकार दे दिया गया तो उसके घातक परिणाम होंगे। आज जब अरून्धतीराय या गिलानी की बात है तो आपको अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर सीमा लगाने की बात अच्छी लग रही है किन्तु यदि परिस्थियॉ इसके विपरीत हुई तब हमें कई गुना ज्यादा गुलामी झेलनी पड़ सकती है। हम इंदिरा जी के आपात काल को भूले नही हैं। इसलिए मेरा सुझाव है कि हम गलत विचारो का मुकाबला सही विचारों से ही करें न कि विचारों को कानून से रोककर ।

विनायक सेन प्रकरण को इसाइयत के साथ जोड़ना ठीक नही। यूरोपीय युनियन के लोग इसाई और हिन्दू के नाम पर नहीं आये थे। वे आये थे समाजवाद और मानवाधिकार के नाम पर। जिस तरह विदेशी शक्तियों ने तथा उनसे पुरस्कार पाने वालों ने दबाव बनाया था। उससे स्पष्ट दिखने लगा था कि हमारी न्यायपालिका दबाव नही झेल पायगी। जिस ताम झाम के साथ हल्ला करके विदेशी शक्तियॉ न्यायलय में आकर बैठी वह तो एक प्रकार का खुला दबाव ही था। विदेशी शक्तियों द्वारा पुरस्कार प्राप्त सभी लोगो ने एक स्वर में विनायक सेन के पक्ष में हस्ताक्षर भी किये और आवाज भी उठाई। इस हस्ताक्षर अभियान से स्पष्ट हुआ कि ये विदेशी पुरस्कार लेना और देना भी किसी गुलामी से ज्यादा कुछ नही। पुरस्कार लेने का संकेत है कि आप कहीं न कहीं बंध रहे है । फिर भी हमारे न्यायालयों ने सारे दबाव के बाद भी निर्णय देकर एक मिसाल कायम कर दी है। विदेशी हस्तक्षेप कर्ता शक्तियॉ तो शर्मिन्दा है ही किन्तु हमारे देश में उछल कूद कर रहे मानवाधिकार

कार्यकर्ता और विदेशी सम्मान पाये हुए हस्ताक्षर कर्ताओं की तो बोलती ही बन्द है।

आप हर मामले में कुचलने की बात कह रहे हैं जो जो ठीक नहीं। कुचलना अन्तिम समाधान है, पहला नही। नक्सलवादियों के पक्ष में बोलने वालो को भी कुचल दे और कश्मीर में आवाज उठाने वालों को भी । चीन हमेशा ऐसी भाषा बोलता रहा किन्तु अब उसने भी अपनी भाषा सुधारनी शुरू की है। हम दुनियॉ में अकेले नही है बल्कि दुनियॉ के एक भाग मात्र है। आप बार बार कश्मीर जाकर बसने की बात कर रहे हैं क्यों नही आप छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले के अबूझभाड क्षेत्र में बस जाते। कौन रोक रहा है आपको ?

यह हमारे देश का सौभाग्य है कि हमारा प्रधानमंत्री राजनीतिज्ञ नहीं हैं। यदि वे राजनैतिक दांव पेंच के जानकार होते तो वे लोकप्रिय हो जाते भले ही देश का कुछ भी होता। हमारे बिपक्ष के नेता अडवाणी जी ने बड़ी शान से कहा कि स्वतंत्रता के बाद मनमोहन सिंह सबसे कमजोर प्रधानमंत्री है। मेरे विचार में यह हमारे लिए गर्व की बात है, शर्म की नही। हम किसी तानाशाह देश की चर्चा नही कर रहे जहॉ मजबूत प्रधानमंत्री की जरूरत हो। हमने साठ वर्षो के नेहरू परिवार के शासन में मजबूत प्रधानमंत्री देखे हैं जो न मंत्रिमंडल की परवाह करते थे न पार्टी की। अडवाणी जी ने ऐसे प्रधानमंत्री की तारीफ करके अपने स्वभाव का परिचय दिया है जिन्हे लौह पुरूष कहे जाने पर गर्व होता है। प्रधानमंत्री प्रत्येक मंत्री से तो उपर होता है किन्तु मंत्रीमंडल से उसे नीचे ही रहना चाहिए। उसे पार्टी से भी नीचे रहना पड़ता है। न अडवाणी जी ने कभी पार्टी की परवाह की न नेहरू ने और न ही इन्दिरा ने। मेरे विचार में यह प्रवृत्ति घातक है। मंत्रिमंडल का निर्णय सामूहिक होता है। मनमोहन सिंह जी ने साठ वर्षो में पहली बार लोकतंत्र को ठीक से समझा है। सामूहिक जिम्मेवारी से देश चलाना बहुत कठिन काम है क्योंकि ऐसी स्थिति में कई बार न चाहते हुए भी अपने अहम को दबाना पड़ता है । कई बार तो यही लोकतंत्र आपको अडवाणी सरीखे लौह पुरूष के ताने सुनने को भी मजबूर कर देता है । मेरा स्पष्ट मत है कि भारत के लिए लौह पुरूष की जरूरत न होकर समाजवादी प्रधानमंत्री अधिक अच्छा होगा। हमने लौह पुरूष का जमाना देख लिया। लौह पुरूषो ने देश को जितना नुकसान पहुचाया है वह बहुत है। अब तो भारत को ऐसे लौह विचारो से मुक्ति चाहिए । मनमोहन सिंह जी ने यह खतरा उठाया है । उन्होने अपनी बदनामी उठाकर भी लोकतंत्र तथा सामूहिक नेतृत्व की नयी प्रणाली विकसित की है। अडवाणी जी ने अपने भाषणो में मनमोहन सिंह को दया का पात्र बताया है। मुझे दुख होता है कि पंडित नेहरू, इन्दिरा गॉधी, राजीव गॉधी आदि तो उनकी नजर में प्रशंसा के पात्र है और मनमोहन सिंह दया के पात्र । आप चाहे जो सोचते हो किन्तु मेरा विचार है कि किसी सुशासक तानाशाह की अपेक्षा लोक तांत्रिक कमजोर प्रशासक कई गुना अच्छा होता है । नेहरू, इदिरा गॉधी आदि सुशासक थे या कुशासक यह तो अडवाणी जी बता सकते है किन्तु मनमाने निर्णय लेने के

लिए जीवन भर विख्यात रहे। मनमोहन सिंह ने जो भी निर्णय किये उनमे एक भी मनमाना नही था चाहे वह निर्णय अच्छा रहा हो या बुरा। भाजपा को नेहरू परिवार में गुण दिखने लगे है और मेरी साठ वर्षो से धारणा रही है कि जब तक देश से परिवार वाद समाप्त नही होगा तब तक भारत की समस्याओं का समाधान सम्भव नही।

3 श्री छवील सिंह सिसोदिया, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

प्रश्न–आपने ज्ञान तत्व में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की प्रशंसा करके हम सबको आश्चर्य चकित किया है जो प्रधानमंत्री भ्रष्टाचार नही रोक सकता, मंहगांई नही रोक सकता विदेशो से काला धन वापस नही ला सकता ऐसे निकम्मे प्रधानमंत्री का हम क्या करे । संसद का पूरा सत्र जे.पी.सी की मांग की भेट चढ़ गया किन्तु प्रधानमंत्री ने मॉग नही मानी। अब बड़ी मुश्किल से लाचार होकर मानी। जे.पी.सी. की मॉग न्यायोचित थी किन्तु प्रधानमंत्री अड़े रहे । इनसे तो अच्छे सोमनाथ चटर्जी थे जिन्होने राइट टू रिकॉल का समर्थन किया था।

उत्तर–ज्ञान तत्व 217 में लिखे मेरे लेख पर गंभीर प्रश्न उठाने वाले आप अकेले नही हैं। मनोज दुबलिस जी मेरठ ने तो और भी आगे जाकर लिखा है कि ऐसे प्रधानमंत्री को इमानदार कहना, इमानदारी का ही अपमान है। अन्य साथियों ने भी अपने अपने तरीके से विरोध प्रकट किया है। सिर्फ विस्फोट डाट काम के संजय तिवारी जी ने अपने बेवसाइट पर एक लेख लिखा जिसमें उन्होने ठीक दिशा ली अन्यथा मै तो ऐसा विचार रखकर स्वयं को नितान्त अकेला ही महसूस कर रहा था।

बिल्कुल अकेला होने के बाद भी मैं आज तक अपने विचार पर कायम हूॅ । मैं अब भी चाहता हूॅ कि इस मुद्दे पर खुला विचार मंथन हो। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह पर आरोप है कि वे कमजोर प्रधानमंत्री हैं। मेरे विचार मे आरोप सच है। अब तक भारत मे जो भी प्रधानमंत्री हुए वे सब कही न कही मनमोहन सिंह की अपेक्षा अधिक मजबूत थे। प्रेस कांफ्रेस में उन्होने दो बाते कही (1) वे इतने बूरे नही है जितना प्रचारित हो रहा है (2) उन्होने कई गल्तियॉ भी की हैं किन्तु गल्तियों से अधिक अच्छे काम किये हैं। मै जानता हूॅ कि मनमोहन सिंह न बुरे आदमी है न उन्होने गल्तियॉ की है । आज तक किसी प्रधानमंत्री ने गलती करने के बाद भी गलती स्वीकार नही की क्योंकि वे मजबूत प्रधानमंत्री थे । पंडित नेहरू और इन्दिरा गांधी जिनकी तारीफ लालकृष्ण अडवाणी जी ने मजबूत प्रधानमंत्री के रूप में की हैं, उन्होने कश्मीर का मसला उलझाकर या अपातकाल लगाने के बाद भी कभी गलती नही मानी क्योंकि वे मजबूत प्रधानमंत्री थे । दूसरी ओर हमारे प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी बिना गलती किये, गलती मान रहे हैं। सिद्ध होता है कि वे वास्तव में अब तक के सबसे कमजोर प्रधानमंत्री है।

दूसरा आरोप है कि उन्हे राजनीति नही आती। आज कल राजनीति का अर्थ कुटनीति ही माना जाता है यह बात भी पूरी तरह सच हैं। मनमोहन जी कूटनीति के मामले में कमजोर प्रधानमंत्री है । वैसे तो स्वतंत्रता के बाद कूटनीति रूपी राजनीति का केन्द्र तो नेहरू पारिवार ही रहा है। लाल बहादुर शास्त्री, मुरार जी देसाई, विश्वनाथ प्रताप सिंह, अटल बिहारी वाजपेयी आदि नेहरू परिवार की कूटनीति के सामने हमेशा पराजित रहे। मनमोन सिंह तो राजनीति रूपी कूटनीति में शून्य ही माने जाते है।

हमे सबसे पहले यह विचार करना होगा कि मजबूती और कूटनीति में पारंगत होना हमारे भारत के प्रधानमंत्री का गुण मानना चाहिए कि दुगुर्ण। स्पष्ट सिद्धान्त है कि शासन के लिए ये दोनो गुण माने जाते है और व्यवस्था के लिए दुगुर्ण क्योकि कूटनीति हमेशा ही शासन मे सहायक होती है और व्यवस्था मे घातक । नेहरू परिवार में हमेशा शासक की भावना रही है । अडवाणी जी ने भी सत्ता की ओर दौड़ में प्रतिस्पर्धा की है। कभी शासन को व्यवस्था के रूप में किसी ने नही समझा। अटल जी ने इस दिशा में बढ़ने का प्रयास किया तो किनारे कर दिये गये। पहली बार मनमोहन सिंह ने स्वयं को शासक न समझकर व्यवस्थापक रूप में माना । शासन हमेशा दूसरो पर होता है और व्यवस्था हमेशा अपनो के बीच होती है। शासन के लिए मजबूती भी आवश्यक है और कूटनीति भी। मैं आज तक नही समझ सका कि अपने के बीच क्यो मजबूती आवश्यक है क्यो कूटनीति। विदेश संबंधो के मामालो में तो मजबूती और कूटनीति आवश्यक होती है किन्तु हमारे आन्तरिक मामलो में यह प्रवृत्ति घातक है। साठ वर्षो के शासन काल में नेहरू परिवार ने हमेशा शासक और शासित के भाव को मजबूत किया। परिणाम स्वरूप भारतीय जनमानस गुलाम मानसिकता का अभ्यस्त हो गया । उसे एक मजबूत शासक चाहिए । दूसरे के लिए तो चाहिए ही, अपने लिए भी चाहिए । यदि कोई प्रधानमंत्री उन्हे व्यवस्था में भागीदारी देता है तो उसे अव्यवस्था का डर सताने लगता है। वह उसको कमजोर कहकर उसके गुण को ही अवगुण बताना शुरू कर देता है जैसा कि आज हम देख रहे हैं।

मनमोहन सिंह पर तीसरा आरोप है कि उन्होने भ्रष्टाचार रोकने के लिए कुछ नही किया। मेरे विचार में यह आरोप पूरी तरह उल्टा है । स्वतंत्रता के बाद पहली बार हुआ है कि उतने बड़े बड़े घपले उजागर हुए। हर आदमी मानता है कि सन सैतालीस से लेकर आज तक निरतंर भ्रष्टाचार बढ़ता रहा है। निरंतर भ्रष्टाचार बढ़ने का कारण यह था कि अधिकांश भ्रष्टाचारो में सत्ता का समर्थन था और हर शासक कूटनीति का सधा खिलाड़ी था। राजीव गांधी पर भ्रष्टाचार का आरोप आज तक लटक रहा है और आश्चर्य की बात है कि ऐसे गंभीर आरोप के बाद भी वह परिवार सीना तानकर सत्ता संघर्ष में शामिल है। सम्पूर्ण भारत मे यह मान लिया गया है कि सत्ता और भ्रष्टाचार के बीच चोली दामन का संबंध है। यदि सत्ता का संबंध रहेगा तो भ्रष्टाचार कभी भी कुछ बिगाड़ नही सकेगा। पहली बार राजनेताओं तथा नौकर शाहो के बीच यह नया संदेश जाना शुरू हुआ है कि भ्रष्टाचार का छिपना अब उतना

असान नही। मेरे विचार में इस संदेश का एक ही आधार है कि प्रधानमंत्री न स्वयं भ्रष्ट हैं न स्वयं शासक है। वह तो व्यवस्था प्रमुख पात्र है। यदि व्यवस्था में कोई फंसा तो उसे प्रधानमंत्री की ओर से कोई सुरक्षा नही और व्यवस्था से कोई बच गया तो प्रधानमंत्री की ओर से उसे फसाने की कोई पहल नही। यही कारण है कि साठ पैसठ वर्षो से निरंतर बढ़ते जा रहे भ्रष्टाचार की एक एक परत खुलनी शुरू हुई है।अब तो न्यायपलिका के भी भ्रष्टाचार उजागर होने लगे है अब तो बड़ी बड़ी वैज्ञानिक शोध संस्थाएँ भी सफाई देती फिर रही है। भ्रष्टाचार पर स्थाई चोट शुरू हो गई है और वह भी किसी प्रधानमंत्री की सक्रियता का परिणाम न होकर किसी प्रधानमंत्री द्वारा शासन व्यवस्था में बदलाव का परिणाम है।

मनमोहन सिंह जी पर चौथा आरोप है कि उन्होने विदेशो में जमा खरबो का काला धन वापस लाने की कोई ठोस पहल नही की। यह आरोप पूरी तरह असत्य है। भारत से जो भी काला धन विदेशो में जाकर चोरी से जमा हुआ, उसके विदेश जाने की मात्रा उन प्रधानमंत्रियों के कार्यकाल की है जो मजबूत प्रधानमंत्री थे। मनमोहन सिंह के कार्यकाल में ऐसा धन विदेश जाने की गति घटी है। आश्चर्य है कि पिछले प्रधानमंत्रियों के कार्यकाल में चोरी होती रही। उन्हे मजबूत प्रधानमंत्री कहा जा रहा है और वर्तमान प्रधानमंत्री पर आरोप है कि वे उन चोरो के न नाम उजागर कर रहे है न ही माल पकड़कर ला रहे है। आश्चर्य यह है कि यह आरोप लगाने में वे लोग आगे आगे है जिनके स्वयं के मजबूत शासन काल में भी यह काला धन विदेश जाता रहा। वे मजबूत लोग एक कमजोर प्रधानमंत्री से प्रश्न कर रहे है कि आपने अब तक कुछ नही किया। जो न्यायपालिका इस समय काले धन के मामले मे इतनी सक्रिय है वही न्यायपालिका साठ वर्षो से क्या कर रही थी जब काला धन चोरी से जा रहा था ? स्पष्ट है कि उस समय न्यायपालिका भी मजबूत प्रधनमंत्री होने के कारण दबी हुई थी जो अब मनमोहन सिंह के कार्यकाल में मजबूती से कदम उठा पा रही है।

मुझे डर है कि बड़ी मुश्किल से साठ पैसठ वर्ष बाद हमारा भारत का लोकतंत्र नेहरू परिवार द्वारा स्थापित पालित पोषित शासक शासित वाली व्यवस्था से निकल रहा है। अब न्यायपालिका मजबूत कदम उठा पा रही है। अब मंत्री मंडल के सदस्य खुले आम अपने विचार व्यक्त करने लगे है। अब देश का आम नागरिक भ्रष्टाचार पर खुली चर्चा करने लगा है। कहीं ऐसा न हो जावे कि यह सारा प्रयत्न हमारी ना समझी से असफल हो जावे और भारत फिर से नेहरू परिवार स्थापित मजबूत प्रधानमंत्री के कूटनीतिक राजनैतिक जाल में फस जावे। नेहरू परिवार के पास साठ वर्षो से लगातार एक बुना हुआ कूटनीतिक जाल है। उस जाल से न चन्द्रशेखर बच पाए न चरण सिंह । अब उस जाल की लालच में अडवाणी जी फंस रहे है । अडवाणी जी ने जिस तीव्रता से सोनिया जी से क्षमा याचना की वह तीव्रता एक खतरनाक दिशा को प्रकट करती है।

मेरी हार्दिक इच्छा है कि हम प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह जी की भूलों की तरह इशारा भी करे और उन्हे सलाह भी दे । आवश्यकता होने पर उनकी समीक्षा भी करे किन्तु सलाह और समीक्षा के नाम पर आलोचना का खेल बन्द कर दे। वर्तमान समय में मनमोहन सिंह की आलोचना दो समूहों को ज्यादा पसंद आ रही है जिनमे एक है नेहरू परिवार, दिग्विजय सिंह तथा उनकी चौकड़ी और दूसरे है अडवाणी, सुषमा स्वराज की टीम। पिछले साठ वर्षो से इन दोनो का सत्ता संघर्ष हम देखते रहे है जिसमें नेहरू परिवार हमेशा ही मजबूत रहा। अब भी वही खतरा है कि घूम फिरकर भारत के भाग्य की चोटी नेहरू परिवार के हाथ आ जायेगी । हमे अब भी सतर्क होना है।

मेरा आप सबसे निवेदन है कि आप अब कम से कम भारत के साथ कोई खिलवाड़ न करे । हम सबसे पहले आश्वस्त हो कि भारत नेहरू परिवार की राजनैतिक छाया से पूरी तरह मुक्त हो चुका है । उसके बाद हम तय करे कि हमे कौन सी व्यवस्था पसन्द है । यदि हमे मजबूत प्रधानमंत्री चाहिए तो नरेन्द्र मोदी अन्यथा नितिश कुमार। जब तक ऐसी आश्वस्ति न हो जाये तब तक हम किसी भी तरह मनमोहन सिंह को कमजोर न होने दे। देश को बचाना है तो हमे खिलवाड़ बन्द करना ही चाहिए । मेरा भाजपा से आग्रह है कि वह लालच में फंस कर नेहरू परिवार को मजबूत करने का राष्ट्र घातक कदम न उठावे। मेरा आपसे भी निवेदन है कि आप ऐसी कूटनीतिक चालो को समझने की कोशिश करे, जिनमे देश साठ वर्षो से फसा हुआ है ।

मैने पिछले लेख में मनमोहन सिंह जी को त्यागपत्र देने की सलाह दी थी । मेरा आशय यह था कि मनमोहन सिंह का बना रहना देश हित में है किन्तु अब ऐसा संभव नही दिखता। इसलिए मनमोहन सिंह के व्यक्तिगतहित में हैं कि वे त्यागपत्र दे दे। मेरे विचार से यदि उन्होने त्यागपत्र नही दिया तो उनकी शहादत स्पष्ट है। निर्णय करना है कि वे देश हित में शहीद हो जाये अथवा चुपचाप नेहरू परिवार के बीच से हटकर स्वयं को बचा ले । मनमोहन सिंह जी ने शहीद होना ही ठीक समझा है। अब मेरी आपको सलाह है कि आप सोच समझकर निर्णय लें।

मनमोहन सिंह की प्रेस कांफ्रेस

मनमोहन सिंह जी ने प्रेस को संबोधित किया। उनका स्वर बुझा हुआ था। आंखे नम थी। उनके हर वाक्य से ऐसा आभास होता था कि वे वास्तव में दुखी मन से उत्तर दे रहे है।

उन्होने प्रश्नो के उत्तर में कहा कि उनकी कई प्रकार की मजबूरियॉ रही जिनके कारण वे ठोस निर्णय नहीं ले पायें। गठबंधन सरकार चलाने के लिए न चाहते हुए भी समझौते करने पड़ते हैं जो मैंने भी किये। उन्होंने स्पष्ट किया कि उनसे भी कई गल्तियॉ हुई है। किन्तु इन सबके बावजुद वे उतने बुरे नहीं जितने प्रचारित किये गये है। मनमोहन सिंह जी ने कई प्रश्नो के उत्तर भी दिये जिनमें निराशा का भाव अधिक था, उत्साह कम।

पूरी प्रेस कांफ्रेस के बाद मुझे ऐसा लगा कि मनमोहन सिंह हृदय से दुखी और निराश थे और वे दिल से त्याग पत्र के पक्ष में है। किन्तु सोनिया जी उन्हे तब तक बनाये रखना चाहती हैं जब तक उनकी और छीछालेदर न हो जावे। सोनिया जी राहुल के लिये कोई खतरा मोल नहीं ले सकती। यही कारण है कि मनमोहन सिंह जी को त्याग पत्र से भी रोक कर रखा गया है।

राजनीति में कब क्या हो जावे यह पता नहीं चलता। भाजपा का हर नेता एक ओर तो मनमोहन सिंह को कमजोर और डमी प्रधानमंत्री कहता है तो दूसरी ओर वह कांग्रेस पार्टी या सोनिया राहुल को बचाकर मनमोहन सिंह की आलोचना करता है जबकि वे रिमोट कंट्रोल से ज्यादा कुछ नही। आश्चर्य तो तब हुआ जब भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी ने मनमोहन सिंह की तुलना में पण्डित नेहरू, इन्दिरा गांधी तथा राजीव गांधी तक की भरपूर प्रशंसा कर दी । पण्डित नेहरू का तो उन्होने नाम तक लिया। अब भाजपा को नेहरू परिवार में सारी अच्छाइयां नजर आने लगी हैं। प्रधानमंत्री ने प्रेस कांफ्रेस में एक प्रश्न के उत्तर में खुलासा किया कि भाजपा गुजरात के एक मंत्री के खिलाफ हुई कानूनी कार्यवाही के बदले ऐसी आक्रामक है। मुझे भी लगता है कि भाजपा द्वारा प्रधानमंत्री के खिलाफ एकतरफा मोर्चा खोलने का यह कारण हो सकता है अन्यथा जीवन भर नेहरू इन्दिरा परिवार को जी भर कर कोसने वाली भाजपा एकाएक उस परिवार की सहायक कैसे बन जाती।

मनमोहन सिंह जी की सबसे बड़ी गलती तो यही रही कि उन्होने कभी किसी गलत कार्य से समझौता नही किया। उन्होने न तो किसी गलत कार्य का सीमा से अधिक विरोध किया और न समर्थन। उन्होने सब कुछ एक व्यवस्था के अनुसार चलने दिया। वे भूल गये कि राजनीति में कूटनीति का भी बहुत महत्व होता है। आज वे एक कूटनीतिक षड़यंत्र के शिकार हैं जिसके एक पक्ष में खड़ा है नेहरू परिवार और उनकी चौकड़ी तो दूसरे पक्ष में ताल ठोक रहे हैं आडवाणी और उनकी चौकड़ी।

सच्चाई चाहे जो हो किन्तु इतना तो स्पष्ट है कि प्रधानमंत्री के रूप मे मनमोहन सिंह जी चक्रव्यूह में पूरी तरह फंस गये हैं और कोई चमत्कार ही उन्हें बचा सकता है अन्यथा अब राहुल गांधी और आडवाणी के बीच जंग होगी और इसमें राहुल गांधी का मार्ग आसान दिख रहा है।

नोट– पिछले अंक मे मैने सभी पाठको से निवेदन किया था कि वे कम से कम दस –दस नये गंभीर पाठको के नाम ज्ञान तत्व को भेजे। इस संबंध मे श्री सोमकांत शर्मा दुर्ग से दस नये नाम प्राप्त हुए हैं। तीन नाम महेन्द्र प्रसाद जी जोधपुर राजस्थान तथा तीस नाम श्री जे० पी० सिंह विल्थरा रोड बलिया उ० प्र० से प्राप्त हुए है। अन्य पाठको से नये प्राप्त करने की प्रतीक्षा है।

नोट दो–श्री पंकज गोयल तथा श्री मति प्रीति गोयल ए–196 से0–22 नोएडा गौतमबुद्ध नगर उ0 प्र0 ने ज्ञान यज्ञ परिवार ट्रस्ट मे सम्मिलित होकर दो हजार रूपया मासिक दान स्वरूप देने की सूचना दी हैं। हम श्री गोयल तथा श्री मति गोयल का धन्यवाद देते है कि वे ज्ञान यज्ञ परिवार ट्रस्ट के दाता सदस्य के रूप मे पंजीकृत हुए हैं। अब ट्रस्ट मे ऐसे दाता सदस्यों की सूची बढ़कर सात हो गई है।

सूचना–

लोकस्वराज्य संघ तथा ज्ञान यज्ञ परिवार की मिली जुली बैठक 27 मार्च को उज्जैन में पौराणिक जी के निवास पर होनी तय हुयी है। आपसे निवेदन है कि आप आने की कृपा करें। पौराणीक जी का फोन नम्बर 09406626456 है।